साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 50, दिसम्बर(प्रथम) , 2018

।।वैकुण्ठ चतुर्दशी पर्व माहात्म्य।।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

(-: कार्तिक स्वामी यात्रा संस्मरण :-)

शम्भु प्रसाद भट्ट "स्नेहिल"

अत्यंत सौभाग्यशाली/पुण्यप्रदायक पावन सुअवसर,

"नमः कार्तिक स्वामी जी,
प्रभु तुम क्रोंचवासी हैं।
शिखर उच्च है वहाँ पर;
सभी के पापनाशी हैं।।"

ईष्टदेव व पितृदेवों की असीम अनुकम्पा तथा अपने स्नेही स्वजनों के परम स्नेहाशीर्वाद के सद्प्रभाव से वैकुण्ठ चतुर्दशी के अति पुण्य प्रदायक पर्व (दिनांक 21:11:2018/ 22:11:2018) पर अपने आवासीय स्थल श्रीक्षेत्र, श्रीनगर (गढ़वाल) से ईष्ट-मित्रगणों के साथ प्रभु कार्तिकेय के पावन मंदिर स्थल श्री कार्तिक स्वामी डांडा (जिसे स्थानीय जन द्रोणगढ़ी स्वामीनाथ डांडा भी कहते हैं) की शुभ यात्रा का परम सौभाग्यशाली सुअवसर प्राप्त हुआ।

स्कन्दपुराण तथा शिवमहापुराण एवं विभिन्न पौराणिक व ऐतिहासिक ग्रन्थों में उल्लिखित विवरणानुसार- कैलाशवासी प्रभु शिव-शंकर के ज्येष्ठ पुत्र कुमार कार्तिकेय द्वारा बालपन में ही अपने जन्म के मूल उद्देश्य की पूर्ति हेतु देव सेनापति के पद पर आसीन होने के उपरांत परम-प्रतापी/बलशाली व महा अत्याचारी राक्षस राज तारकासुर का वध किया गया।

तारक नामक असुर को मारने/तारने के पश्चात् एक दिन कुमार कार्तिक तथा शिव जी के कनिष्ठ पुत्र श्री गणेश जी के मध्य श्रेष्ठता संबंधी विवाद होने पर भोले शिव-शंकर तथा पार्वती द्वारा दोनों पुत्रों को विवाद का समाधान सुझाते हुए आदेश दिया गया कि- आप दोनों में से जो भी संपूर्ण ब्रह्मांड का परिभ्रमण कर सबसे पहले यहाँ कैलाश में हमारे सम्मुख उपस्थित होगा, वही श्रेष्ठ व प्रथम पूजनीय घोषित होगा।

यह सुन कार्तिकेय तत्काल अपने वाहन मोर में सवार होकर ब्रह्मांड यात्रा पर प्रस्थान कर गये, लेकिन गणेश जी परेशान थे कि वे अपने मूषक (अत्यंत कम गति वाले) वाहन के

सहारे इतनी बड़ी-लंबी व कठिन यात्रा कभी-भी कार्तिकेय से पहिले पूरी नहीं कर सकते हैं, अतः उन्होंने मन ही मन सोचा और उसके बाद उनके मन में एक युक्ति सूझी कि क्यों न मैं संपूर्ण ब्रह्मांड तथा महातीर्थ समान अपने माँ-बाप (शिव-पार्वती) की परिक्रमा कर इस फल को प्राप्त कर लूं और यह सोचकर वह शीघ्रता से शिव-पार्वती के सम्मुख गया और विधिपूर्वक श्रद्धा भक्तिभाव से अपने माँ-बाप की परिक्रमा करने लगा। परिक्रमा पूर्ण कर वह माँ-बाप से वर प्राप्त करने को सम्मुख खड़ा हुआ और माँ-बाप के संबंध में शास्त्रोक्त मतानुसार संपूर्ण ब्रह्मांड व देवी-देवताओं से भी बढ़कर महिमा का वर्णन करने लगा। गणेश जी की बुद्धि चातुर्यता व महत्वपूर्ण ज्ञान से प्रभावित होकर उन्होंने गणेश को श्रेष्ठता का वर दिया और उन्हें प्रथम पूज्यदेव घोषित कर दिया।

उधर दूसरी ओर कार्तिकेय जी लंबे अन्तराल से ब्रह्मांड यात्रा पूर्ण करके वापसी कैलाश लौट रहे थे, तो रास्ते में देवर्षि नारद वीणा बजाते हुए कार्तिकेय को शिव-पार्वती द्वारा गणेश जी को श्रेष्ठता की पदवी प्रदान किये जाने की सूचना देते हैं और बताते हैं कि कैलाश में तो गणेश जी को श्रेष्ठ घोषित किये जाने के बाद उनकी रिद्धि-सिद्धि नामक दो कन्याओं से पाणिग्रहण संस्कार संपंन किया गया है, जिनसे शुभ व लाभ नामक दो पुत्र भी हो चुके हैं, इससे नाराज होकर कुमार कार्तिक क्रोधावेश में कैलाश जाकर शिव-पार्वती से अपनी रूष्टता का कारण बताते हैं और माँ-बाप को प्रणाम कर क्रोंच पर्वत के उच्चतम शिखर पर जाकर अपने शरीर के मांस को त्याग कर मात्र अस्थिपंजर ढांचे में ही कठोरतम तपस्या में निमग्न हो जाते हैं।

"स्कन्दोऽपि पितरं नत्वा,
कोपाऽग्नि ज्वलितस्तदा।
जगाम पर्वतं क्रोंच;
पितृभ्यां वारितोऽपि सन्।।"

-----शिवपुराण/कुमारखण्ड।।

बालक कार्तिकेय के तपस्या में लीन हो जाने व लंबे समय से कैलाश पर्वत पर वापस न आने से शिव-पार्वती दुखी होकर उन्हें ढूँढने निकले, तो चलते-चलते वे उस क्रोंच पर्वत पर भी पहुँचे, जहाँ कार्तिक स्वामी तपस्या में तल्लीन थे।

शिव-पार्वती के क्रोंच पर्वत पर पहुँचने से कार्तिकेय नाराज होकर वहाँ से अन्यत्र जाने को तैयार हुए तो उसके माँ-बाप ने उन्हें रोककर स्वयं ही वापस कैलाश जाने की बात कही, लेकिन साथ ही इस बात पर सहमति व स्वीकृति अवश्य चाही कि वह उन्हें हर वर्ष वैकुण्ठ चतुर्दशी की

तिथि को यहाँ आकर उनके दर्शन की बात मान जायें। कुमार कार्तिकेय द्वारा इस प्रस्ताव पर सहमत होने के बाद व शिव-पार्वती वहाँ से अपने निवास स्थान को प्रस्थान कर देते हैं।

कहते हैं कि तब से हर वर्ष शिव-पार्वती अपने समस्त गणों व देव-ऋषियों सहित वैकुण्ठ चतुर्दशी की रात्रि को इस क्रोंच पर्वत के उच्च शिखर पर आते हैं और रातभर अपने पुत्र कार्तिकेय को वात्सल्य प्रेम (ममता) से सराबोर करके प्राप्तःकाल की प्रथम वेला में कैलाश को वापस लौट जाते हैं।

जनपद-चमोली व रूद्रप्रयाग के मध्य लगभग 3048 मी0 की ऊँचाई पर स्थित यह वही क्रोंच पर्वत है, जहाँ पर पौराणिक काल से लेकर वर्तमान में भी कार्तिक स्वामी तपस्यारत्त हैं। इस सिद्ध व पावन पवित्रतम देवतीर्थ में 'कार्तिकेय मंदिर सेवा समिति' द्वारा प्रतिवर्ष इस अति पुण्यशाली अवसर पर सैकड़ों-हजारों श्रद्धालु भक्तगणों के सान्निध्य में रातभर जागरण/पूजन का कार्यक्रम आयोजित करवाकर अनवरत भक्तिभाव से भजन-कीर्तन का महाकार्य किया जाता है, जिसमें सौभाग्य से हमें भी सपत्नी समय-समय पर प्रभुकृपा प्रसाद पाने का सुअवसर मिलता रहता है।

इसी कृपा व आशीष प्राप्ति का सौभाग्य हमें इस वर्ष (विक्रमी संवत् 2075 तदनुसार सन् 2018) के वैकुण्ठ चतुर्दशी के अवसर पर मिला। यहाँ रातभर शुक्ल पक्षीय चतुर्दशी की चंद्रमा की स्वच्छ चान्दनी की शीतलता व स्वर्णिम छटा में रात्रि जागरण का जो पुण्य मिला, निश्चित ही यह हमारा पूर्व कृत सद्कर्मों का ही पुण्य प्रभाव रहा होगा।

इस अवसर पर रात्रि में भजन-कीर्तन के मध्य में चारों प्रहर की दिव्य आरती होती है, अनेकानेक देवताओं का देवपश्वाओं पर अवतरण होता है, निश्चित ही यह दृश्य अद्वितीय व अलौकिक तथा अद्भुत होता है। इसकी एक सूक्ष्मतम छवि प्राप्त कर पाना, पता नहीं कितने पुण्यों के संयोग से प्राप्त होता होगा और वह भी स्वयं शिव परिवार सहित देव-ऋषिगणों की अदृश्य व सच्ची आभासी उपस्थिति में।

शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि वैकुण्ठ चतुर्दशी के इस अत्यंत पावन व पुण्यशाली सुअवसर पर जो भक्तगण श्रद्धा-भक्तिपूर्वक इस पवित्रतम देव स्थल पर रात्रि जागरण व ईश ध्यान करता है, उसके सभी पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं और उसकी सभी सद्मनोकामना निश्चित ही पूरी हो जाती हैं। जिससे वह सुख-समृद्धिपूर्वक जीवन निर्वाह कर अंत में सत्यलोक (वैकुण्ठ धाम) को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है।

कहते हैं कि-
"इह लोके सुखं भुक्त्वा,
चान्ते सत्यपुरं ययौ।"
----स्कन्दपुराण/रेवाखण्ड।।

उपरोक्त तथ्यों का सुविस्तृत विवरण व उल्लेख गम्भीर शोध के बाद तैयार की गई और ईस्वी सन् 2004 में प्रकाशित हमारी (शःप्रःभट्ट"स्नेहिल" की) पुस्तक "श्री कार्तिकेय-दर्शन" में मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि प्रभु कार्तिकेय के स्थल की प्रामाणिकता सिद्ध करने संबंधी यह प्रथम शोध पुस्तक है। इसके बाद कार्तिकेय के अन्य भक्तों द्वारा भी समय-समय पर कार्तिक स्वामी की महिमा का गुणगान करने का अपने-अपने स्तर से सद्-प्रयास किया गया है। लेखक (स्नेहिल) द्वारा इस पुस्तक के प्रकाशन के पश्चात् देश-प्रदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में "श्री कार्तिकेय-दर्शन/सूक्ष्मालोक" शीर्षक से आलेख तैयार कर प्रकाशित करवाया गया है। यह सब इसी कार्तिकेय प्रभु के शुभ आशीर्वाद का ही परिणाम है कि हम उनका अपने अति साधारण-से सामान्यतम शब्दों में गुणगान करने में सफल होने का प्रयास कर पा रहे हैं।

कार्तिकेय के इस तीर्थ स्थल की महत्ता इसलिए भी अत्यधिक है, क्योंकि यह पावन तीर्थ उतर भारत की देवभूमि उत्तराखंड के उच्च शिखरस्थ कार्तिकेय तीर्थ स्थलों में से एक मात्र ऐसा देवस्थान है, जो अपनी आध्यात्मिक विशिष्टता के आधार पर अन्योन्य देवस्थानों में अपना अत्यंत महत्वपूर्ण व सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता है, क्योंकि यह दक्षिण भारत के सुब्रह्मण्यम स्वामी व मोर्गम नामक कार्तिकेय मंदिरों/तीर्थों के बाद उतर भारत का सबसे प्रभावशाली व शक्तिदाई तथा सुफल प्रदायक स्थान है। यहाँ अन्य देवी-देवताओं के अनेकों मंदिर व तीर्थ स्थान विभिन्न-विभिन्न स्थानों पर हैं, लेकिन भगवान् कार्तिक स्वामी का यही एक मात्र तीर्थ स्थान है, जबकि दक्षिण भारत में कुमार कार्तिकेय के विभिन्न नामों से पौराणिक समय से स्थापित अनेकानेक सुप्रसिद्ध तीर्थ-मंदिर हैं।

इस पावन स्थल में आयोजित होने वाले इस महापर्व की धार्मिक व आध्यात्मिक विशिष्टता इस बात से भी अत्यधिक बढ़ जाती है कि वैकुण्ठ चतुर्दशी के ठीक पश्चात् कार्तिक पूर्णिमा की वह अत्यंत पवित्र पुण्यदायक तिथि आती है, जिस तिथि पर स्नान-दान व देव दर्शन/पूजन करने से अनन्त अनन्त पुण्य प्रदायक सुफल प्राप्त होता है। यहाँ रात्रि जागरण के उपरांत अगले दिन कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर देव कार्तिकेय के प्रातःकालीन शुभ दर्शन/पूजन व ध्यान-मनन करके पुण्यता का कई गुना शुभ लाभ स्वतः ही अर्जित हो जाता है। जिससे भक्तों को अनन्त आनन्द की अनुभूति होती है और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है तथा पूर्वकृत

दुष्कर्मों का दुष्प्रभाव समाप्त होकर सद्कर्मों की राह प्रारंभ हो जाती है, कार्तिक पूर्णिमा के माहात्म्य के संदर्भ में शास्त्रों में विसद्विवेचन किया गया है।

यह अति पावन व सुन्दरतम सिद्ध तीर्थ स्थल उत्तराखंड राज्य के जनपद-रुद्रप्रयाग की सीमा के अंतर्गत स्थित है। जिला मुख्यालय से रूद्रप्रयाग-पोखरी-गोपेश्वर पहुँच मोटर मार्ग के रुद्रप्रयाग से मात्र 37 किमी की दूरी पर कनकचौंरी तक किसी भी सवारी वाहन से पहुँचा जा सकता है, इसके बाद हल्की व मध्यम चढ़ाई वाले अत्यंत ही सुंदर घने वन पथ के बीचों-बीच प्रकृति की सुंदरता का आनन्द प्राप्त करते हुए लगभग 04 किमी पैदल चलकर श्री कार्तिकेय के क्रोंच पर्वत शिखरस्थ मंदिर पहुँचा जा सकता है। इस स्थान की प्राकृतिक सुंदरता का अवलोकन व आध्यात्मिक महत्ता का आभास इस पावन तीर्थ स्थल पर जाकर स्वतः ही किया जा सकता है।

यहाँ से दृष्टिगत चौखम्बा, मेरु-सुमेरु, नन्दादेवी, त्रिशूली, कामेट सहित अनेकानेक हिमाच्छादित ऊंची-ऊंची पर्वत चोटियों व वृहद् (बहुत लंबी) हिम श्रृंखला का दृश्य रोम-रोम को रोमांचित व प्रफुल्लित कर देता है और इस शिखर से दृष्टि दौड़ाने पर सुदूर स्थित मसूरी, पौड़ी, चंद्रशिला (तुंगनाथ-चोपता), पनार व ओली बुग्याल आदि-आदि अनेकानेक सौंदर्यता से परिपूर्ण पर्यटन स्थलों का दीदार करना कितना आनन्द व सुखद होता है, यह तो इस स्थान में आने से ही महसूस किया जा सकता है, क्योंकि यह शब्दों में पूर्णतः वर्णित कर पाना संभव नहीं है। इस प्रकार का अद्भुत दृश्यावलोकन का स्थल हजारों में से एकाध ही मिल पाते हैं।

करते बद्ध कर होकर,
शत बार नमन प्रभु को।
करना कामना पूरी;
मिले नहीं धोखा कभी हमको।।

संदर्भ:- 'श्री कार्तिकेय-दर्शन' पुस्तक।

शुभं भूयात्,

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें